ANCESTORS | पूर्वज

सहेज रहेल

पूजा वैश द्वारा संयोजित

यह प्रदर्शनी, पूर्वज, छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय की शताब्दी के लिये ख़ास तौर पर संयोजित की गई है। प्रदर्शनी में ऐसी कलाकृतियाँ हैं जो प्राचीन संस्कृतियों की कहानियाँ बताकर इस संग्रहालय के बुनियादी उद्देश्यों की याद ताज़ा करती हैं।

कहानी-कथन में जब इतिहास कैसे जिया गया था, इस बात पर नहीं, बल्कि यादों में क्या बस गया, इस पर ज़ोर दिया जाता है तब वह सहभाजी बोध निर्माण करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है। संग्रहालय में सामुहिक स्मृतियाँ स्थित हैं जो स्थानीय और जागतिक संस्कृतियों और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में रची गईं कहानियों से जड़ी हैं। सौ वर्ष के अस्तित्त्व में यह संग्रहालय उपनिवेशी इतिहास से, एक नये राष्ट्र के जन्म से, दो विश्वयुद्धों से और दो सर्वव्यापी महामारियों से गुज़र चुका है। दरअसल, पहले विश्वयुद्ध के दौरान संग्रहालय खुल सके उससे पहले ही इस इमारत का फ़ौजी अस्पताल और स्पॅनिश फ़्लू के रोगियों के इलाज के लिये अस्पताल के रूप में इस्तेमाल किया गया था। इस इमारत की दास्तान और उसका शानदार प्राचीन, प्राकृतिक और अर्वाचीन इतिहास यह बताते हैं कि किस प्रकार हम भूतकाल की जानकारी व सामग्री अंकित करके हमारी सच्चाई बयान करते हैं।

सहेज रहेल पुरातत्त्वज्ञान का उपयोग एक रूपक की तरह करते हैं जहाँ बीते समय के अवशेषों की मदद से काल्पनिक संस्कृतियों के उत्थान-पतन की वक्ररेखाएँ खोद निकाली जाती हैं और आदि और अंत व इन दो छोरों के बीच जो कुछ होता है उसके बारे में मनन संभव होता है। आप 'अन्यलोक' के बारे में ऐसे पौराणिक बयान रचते हैं जो प्राचीन इतिहास से लेकर दूर के भविष्य तक का फ़ासला तय करते हैं। इन बयानों का संग्रहालय में निर्मित भविष्य के पुरातत्त्वीय दफ़न स्थान में समावेश किया गया है।

आगंतुक एक मानव-पश्चात संस्कृति के अवशेषों से भरे काल्पनिक तहखाने में प्रवेश करते हैं। रेखाचित्रों, रंगचित्रों, वास्तुशिल्पों, लेखनों और कृत्रिम बुद्धि प्रोग्राम की मदद से एक संचयी पुरालेख निर्मित होता है जो इन काल्पनिक संस्कृतियों, रूही दुनियाओं और मानव-पश्चात संभावनाओं के बारे में टुकड़ों-टुकड़ों में सबूत पेश करता है। इन टुकड़ों को जोड़ने की प्रकिया में संग्रहालय कहानियाँ रचने का एक स्थान बन जाता है जहाँ मानवी, अंकीय और पारिस्थितिक चिन्हों की मदद से यह दुनिया, उसके निवासियों और उनकी आस्था-प्रणालियों के बारे में कहानियाँ रची जा सकें।

पूर्वज प्रदर्शनी की प्रस्तावना होती है छ.शि.म.वा.संग्रहालय के एक चित्र-पटल से जो संग्रहालय के पत्थर के उपकरण और कुल्हाड़ियों के प्राचीन संग्रह का पूरक है। यह पटल मानव क्रम-विकास के बारे में बनाया काल्पनिक चित्र है जहाँ क्रम-विकास के दो अलग-अलग युगों में हमारे पूर्वजों को लड़ते हुए दिखाया गया है। एक में पत्थर फेंक कर लड़ाई हो रही है और दूसरे में धार किये हुए पत्थर के हथियारों की मदद से। इस तरह के अनोखे मन-गढंत कथानक पूरी प्रदर्शनी में दिखाई देते हैं।

आपने महाराष्ट्र के इनामगाँव में स्थित हडप्पा-पश्चात के ताम्रयुगीय उत्खनन क्षेत्र में मिले दफ़न कलश के बलबूते पर एक त्रिविम स्थापना उभारी है। यह दफ़न कलश और उसमें रखा मृतदेह उसी क्षेत्र में मिले कब्रस्तान से काफ़ी अलग है, जिसकी वजह से वह मृतदेह, उसकी उत्पत्ति और तब की संस्कृति में उसका स्थान और ओहदा, ये मसले पुरातत्त्वज्ञों के बीच बड़ी बहस और बहुमत का कारण बने हैं। पुरातत्त्वीय अनुमान के सहारे आपने एक पर्यायी वृत्तांत रचा है जिसमें मनुष्यजाति के निर्मूलन के बाद एक नयी पीढ़ी का उद्भव होता है। लोककथाओं, विज्ञानकथाओं, साहित्य, शहरीकथाओं, पौराणिककथाओं और विडियो गेम्स से संदर्भ लेकर आपने भविष्य की नृवंशवैज्ञानिक चीज़ों और उपकरणों की एक प्रदर्शनी रची है। आपके कथा-कथन अनुसार उत्खनन क्षेत्र में स्थित समाज पर अनिश्चित बहु-अंगी जीवों ने हमला किया था। आपने फ़ेंक दी हुई चीज़ें बँटोर कर उनमें पॉलिउरेथेन मिलाकर ये बहु-अंगी जीव रचे हैं। काले रंग से रंगे उनके डामरी आकार ऐसे लगते हैं जैसे कि भूतकाल से जमा की गई बहुत सारी निकम्मी चीज़ों से बने हों। एक उसी प्रकार का जीव कृत्रिम बुद्धि की मदद से जीवंत रूप पाकर एक विशाल वन के परिदृष्य में इधर-उधर घूमता नज़र आता है। उसका संचलन अंकीय कलन गणित की मदद से होता है जो बाहरी श्रव्य उत्तेजनाओं से होती प्रतिक्रियाओं के कारण संभव है। मनुष्य की जानकारी और अनुभव से परे ये कृत्रिम मन रूप बदलते रहते हैं और भविष्य में जी सकने के लिए अपनी पौराणिक कथाएँ रचते रहते हैं।

प्रदर्शनी में किसी उत्खनन क्षेत्र से मिली चीज़ों का भास दिलानेवाले अनेकों मिट्टी के वास्तुशिल्पों के साथ-साथ कलाकार के कई चित्र भी प्रदर्शित हैं। ये 'लापता पन्नों की किताब' नामक कलाकृति से लिए गए हैं। कलाकार के मुताबिक यह एक काल्पनिक पुरातत्त्वज्ञ की दैनंदिनी है। इस व्युहरचना में एक दरार है जिसके अंदर अलग-अलग लोकों के समय के बड़े-बड़े टुकड़े कलाकृतियों के रूप में तितर-बितर एक-दूसरे पर लुढ़के पड़े हैं। चित्रों के साथ मिलकर ये इतिहास की अनंत परियोजना प्रस्तुत करते हैं। इन आकृतियों का जनक, हमारा विकृत पुरातत्त्वज्ञ एक ऐसे विध्वंसक या षड़यंत्रकारी की भूमिका निभाता है जो ऐसी-ऐसी असंगतियाँ खोज निकालता है जो गुप्त संस्कृतियों के अस्तित्त्व को वज़न देती हैं। इन असंगतियों का प्रकटीकरण इतिहास-लेखन की प्रक्रिया में उपनिवेशी, पाश्चत्य और आधुनिक परिपेक्ष्य में न बैठनेवाली संस्कृतियों और सामाजिक इतिहास को वर्जित करने की वृत्ति की तरफ़ इशारा भी करता है। ये वही परिपेक्ष्य हैं जिन पर 'क्रम-विकास' और 'उन्नति' की कमान टिकी है।

पुरातत्त्वज्ञों और सांस्कृतिक मानववैज्ञानिकों के लेखनों से जुटाए गए छोटे-छोटे अवतरणों में प्राचीन समाजों और उनकी सामाजिक व्यवस्थाओं के बारे में विविध मान्यताएँ मौजूद हैं। ये पौराणिक कथाओं, रोगमारी, मरण और रिवाजों के विचारों को आत्मसात कर पुरातत्त्वविज्ञान को सत्तामिमांसा के सामान्य विचारों से जोड़ता है।

इस प्रदर्शनी में इतिहास को व्यक्तिपरक प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, जहाँ इस व्यक्तिपरक छलनी से तत्थ्यों को छाना जाता है। समय की एक विस्तृत लपेट को प्रस्तुत करते-करते यह प्रदर्शनी जातीयता, जंग, सामाजिक पदक्रम, नागरिक अशांति जैसे मसलों के कमबीनी नज़रीये से हमारा ध्यान दूर हटाकर हमारे विचारों और हमारी करतूतों को पालन-पोषण, उत्तरजीविता और सह-अस्तित्त्व की तरफ़ ले जाती है। बिरादरियों को बनानेवाली पौराणिक विचारधाराओं और आस्थाओं की अनेकता स्वीकार कर के इस विश्व के साथ इमानदारी से पेश आने को यह प्रदर्शनी हमें प्रेरित करती है। यह हमसे पूछती है कि हम इतिहास से क्या समझ पा सकते हैं, हमारे उत्तराधिकारी कौन होंगे और उनके पूर्वजों के नाते हम उनके लिए विरासत में कैसा विश्व छोड़ जायेंगे।

- पूजा वैश

This project was made possible by the support of The Sher-Gil Sundaram Arts Foundation (SSAF) Installation Art Grant 2019.